CLASSROOM PROGRAMME

CLASS X CBSE - HINDI

SANCHAYAN

SHORT NOTE

INDEX

CHAPTER NO:	CHAPTER NAME	PAGE NO:
1	हरिहर काका	3 - 21
2	सपनों के- से दिन	22 - 33
3	टोपी शुक्ला	34 - 44

INTERVAL
Individual Tuition Concept

पाठ - 1

हरिहर काका

लेखक परिचय

मिथिलेश्वर जी का जन्म 31 दिसम्बर 1950 को बिहार के भोजपुर ज़िले के बैसादेह गाँव में हुआ। हिंदी में एम.ए और पीएच.डी करने के उपरांत व्यवसाय के रूप में अध्यापन कार्य को चुना। राँची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रहे और फिर यूजीसी के टीचर फेलोशिप अवार्ड के तहत एच.डी जैन कॉलेज, आरा आ गये। इन दिनों आरा के विश्वविद्यालय में रीडर के पद पर कार्यरत हैं।

मिथिलेश्वर ने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन को बखूबी उकेरा है। इनकी कहानियाँ वर्तमान ग्रामीण जीवन के विभिन्न अन्तर्विरोधों को उद्घाटित करती हैं, जिनसे पता चलता है कि आज़ादी के बाद ग्रामीण जीवन वास्तव में किस हद तक भयावह और जटिल हो गया है। बदलाव के नाम पर हुआ यह कि आम लोगों के शोषण के तरीके बदल गए हैं।

INTERVAL Individual Tuition Concept

मिथिलेश्वर की प्रमुख कृतियाँ हैं-

कहानी संग्रह :- बाबूजी, मेघना का निर्णय, हरिहर काका, चल खुसरों घर अपने,एक और मृत्युंजय, छह महिलाएँ, एक में अनेक।

उपन्यास :- झुनिया, युद्धस्थल, प्रेम न बाड़ी ऊपजे और अंत नहीं।

आत्मकथा :- पानी बिच मीन पियासी, कहाँ तक कहें युगों की बात, जाग चेत कुछ करौ उपाई।

पुरस्कार:-

'अखिल भारतीय पुरस्कार' ('सुरंग में सुबह' उपन्यास)

'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' ('बंद रास्तों के बीच' पुस्तक)

‘अखिल भारतीय मुक्तिबोध पुरस्कार’- (‘बाबूजी’ पुस्तक)

‘अखिल भारतीय पुरस्कार’ (‘सुरंग में सुबह’ उपन्यास)

हरिहर काका पाठ का सारांश

हरिहर काका कहानी मिथिलेश्वर द्वारा रचित एक ऐसी कहानी है। जिसमें लेखक ने ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है। हरिहर काका कहानी में लेखक ने परिवारों और धार्मिक स्थलों में बढ़ रही स्वार्थी प्रवृत्ति को दर्शाया है।

हम प्रस्तुत कहानी ‘**हरिहर काका’** में देख सकते हैं, कि किस तरह से हरिहर काका का शोषण होता है। यहाँ तक कि उनके ही भाई और ठाकुरबारी के महंत उनकी जमीन को अपने नाम करवाने के लालच में हरिहर काका की जान लेने की कोशिश करते हैं।

लेखक ने दूसरी तरफ गाँव की ठाकुरबारी पर भी लोगों का ध्यान खींचा है, जिस पर गाँव के लोगों को बहुत विश्वास है। उनका ठाकुरबारी पर विश्वास किस तरह से अंधविश्वास में परिवर्तित हो जाता है, यह हम कहानी में देखते हैं। ठाकुरबारी में गाँव के लोग मन्नत मांगते हैं। विश्वास रखते हैं कि यहाँ मांगी गई मन्नत जरूर पूरी होती है। जब लोगों की मन्नतें पूरी होती हैं, तब इसका पूरा श्रेय ठाकुरबारी को ही देते हैं। कुछ लोग तो इस अंधविश्वास में अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम लिख देते हैं।इस कहानी में सिर्फ हरिहर काका ही हैं, जो अपनी समझदारी से लालची लोगों और अन्धविश्वास से बचते हैं।

INTERVAL
Individual Tuition Concept

हरिहर काका कहानी गाँव में रहने वाले एक बूढ़े व्यक्ति की कहानी है, जिसने अपना पूरा जीवन साधारण बिताया है। लेखक और हरिहर काका के बीच उम्र का बड़ा फासला है। फिर भी दोनों में मित्रता है। लेखक ने अपने बचपन से हरिहर काका के दुःख को देखा है। लेखक हरिहर काका के पड़ोस में ही रहते हैं और हरिहर काका लेखक को अपने बच्चे की तरह ही प्यार करते हैं।अपनी उम्र के इस पड़ाव में पहुँच चुके काका अपने जीवन में घटित घटनाओं से बहुत दुःखी हैं। अब उन्होंने चुप्पी साध ली है। वे शांत बैठे रहते हैं। लेखक के अनुसार हरिहर काका की इस चुप्पी को जानने के लिए, उनके अतीत को जानना आवश्यक है।

CLASSROOM PROGRAMME

लेखक का गाँव एक छोटा-सा क़स्बा है। जो आरा शहर से चालीस किलोमीटर की दूरी पर है। यह क़स्बा हसनबाजार बस स्टैंड के पास है। इस गाँव की कुल आबादी ढाई-तीन हजार है। गाँव में एक ठाकुरजी का मंदिर है। जिसे लोग ठाकुरबारी भी कहते हैं। ठाकुरबारी की स्थापना कब हुई, इसका किसी को विशेष ज्ञान नहीं है। इस संबंध में प्रचलित है कि जब गाँव बसा था, तो उस समय एक संत यहाँ झोपड़ी बनाकर रहने लगे थे। उस संत ने यहाँ ठाकुरजी की पूजा आरम्भ कर दी, फिर लोगों ने धर्म से प्रेरित होकर चंदा इकट्ठा करके ठाकुरजी का मंदिर बनवा दिया। गाँव के लोगों का मानना है कि यहाँ मांगी गई हर मन्नत पूरी होती है। पहले हरिहर काका रोज ठाकुरबारी जाते थे, परंतु अब परिस्थितिवश यहाँ आना बंद कर दिया है।हरिहर काका चार भाई हैं। सबकी शादी हो चुकी है। उनके बच्चे भी बड़े हैं। हरिहर काका ने दो शादियाँ की थी। परंतु उन्हें बच्चे नहीं हुए। उनकी दोनों पत्नियां भी जल्दी स्वर्ग सिधार गईं। हरिहर काका ने तीसरी शादी अपनी बढ़ती उम्र और धार्मिक संस्कारों के कारण नहीं की। वे अपने भाइयों के साथ रहने लगे। हरिहर काका के पास कुल साठ बीघे खेत हैं। प्रत्येक भाई के हिस्से पंद्रह बीघे खेत हैं। परिवार के लोग खेती-बाड़ी पर ही निर्भर हैं। हरिहर काका के भाइयों ने अपनी पत्नियों को काका की सेवा करने के लिए कहा। कुछ समय तक तो वें सेवा करती रहीं, लेकिन बाद में न कर सकीं। भाइयों ने अपनी पत्नियों को काका की सेवा करने के लिए इसलिए कहा ताकि हरिहर काका की पंद्रह बीघे जमीन उनको मिल जाए।

INTERVAL
Individual Tuition Concept

एक समय ऐसा आया जब हरिहर काका को पानी देने वाला भी कोई नहीं था और बचा हुआ भोजन उनकी थाली में परोस दिया जाता था। उस दिन उनकी सहनशक्ति समाप्त हो गई, जिस दिन हरिहर काका के भतीजे का मित्र घर आया। उस दिन घर में स्वादिष्ट पकवान बनाए गए। काका ने सोचा आज तो उन्हें कुछ अच्छा खाने को मिलेगा, लेकिन उनकी कल्पना के विपरीत उन्हें रूखा-सूखा भोजन परोसा गया। हरिहर काका आग बबूला हो गए और बहुओं को खरी-खोटी सुनाने लगे।

ठाकुरीबारी के पुजारी उस समय मंदिर के कार्य के लिए दालान में उपस्थित थे। उन्होंने मंदिर पहुँच कर इस घटना की सारी सूचना महंत को दी और महंत ने इसे शुभ संकेत माना। गाँव के लोग हरिहर काका के घर की तरफ निकल पड़े। महंत काका को समझाकर ठाकुरबारी ले आए। महंत ने संसार की निन्दा शुरू कर दी और दुनिया को स्वार्थी कहने लगे। ईश्वर की महिमा का गुणगान करने लगे। महंत ने हरिहर काका को समझाया कि अपनी जमीन

ठाकुरबारी के नाम कर दें, इससे तुम्हें बैकुंठ की प्राप्ति होगी तथा लोग तुम्हें हमेशा याद करेंगे। हरिहर काका उनकी बातें ध्यान से सुनते रहे और दुविधा में पड़ गए। अब उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। महंत ने ठाकुरबारी में ही उनके रहने और खाने-पीने का इंतजाम करवा दिया था।

जैसे ही इस घटना की सूचना उनके भाइयों को मिली वैसे ही उन्हें मनाने के लिए ठाकुरबारी पहुँच गए। पर वे उन्हें घर वापिस लाने में सफल न हो सके। अगले ही दिन उनके भाई फिर हरिहर काका के पास गए और उनके पांव पकड़कर रोने लगे। हरिहर काका का दिल पसीज गया और वह अपने भाइयों के साथ घर वापिस आ गए। अब हरिहर काका की खूब सेवा होने लगी, जिस वस्तु की उन्हें इच्छा होती, आवाज़ लगाते ही तुरंत मिल जाती। परन्तु ऐसा केवल कुछ समय तक ही चल पाया।गाँव में हरिहर काका की चर्चा होने लगी। काका के भाई उनकी जमीन अपने नाम लिखवाना चाहते थे। लेकिन हरिहर काका के सामने ऐसे कई उदहारण थे, जिन्होंने अपने जीते जी जमीन परिवार के नाम कर दी और बाद में पछताते रहे। महंत इसका उपाय सोचने लगे। एक दिन महंत ने योजना बनाकर काका का अपहरण करवा दिया। हरिहर काका के भाइयों और गाँवों के लोगों को जब खबर लगी, तब सभी ठाकुरबारी जा पहुँचे। उन्होंने पुलिस को बुला लिया। मंदिर के अंदर महंत एवं उसके आदमियों ने काका से ज़बरदस्ती कागजों पर अंगूठे के निशान ले लिए। पुलिस ने बहुत मुश्किल से मंदिर के दरवाजे का ताला तोड़कर देखा, तो काका रस्सियों से बंधे मिले। उनके भाई उन्हें घर ले गए और उनका बहुत ध्यान रखने लगे।

कुछ दिनों बाद उन पर फिर भी दवाब डाला जाने लगा कि वे अपनी जमीन अपने भाइयों के नाम कर दें। हरिहर काका के भाइयों ने उन्हें धमकाना शुरू कर दिया कि सीधे तरीके से तुम हमारे नाम जमीन कर दो, नहीं तो मार कर यहीं घर में गाढ़ देंगे और गाँवों वालों को पता भी नहीं चलेगा। हरिहर काका के इनकार करने पर उनके भाइयों ने उन्हें मरना-पीटना शुरू कर दिया।काका अपनी मदद के लिए चिल्लाने लगे और काका की आवाज़ सुनकर सभी गाँव वाले इकट्ठा हो गए। महंत को खबर लगते ही वह पुलिस लेकर वहाँ आ पहुँचा। पुलिस ने काका को मुक्त करवाकर उनका बयान लिया। काका ने बताया कि मेरे भाइयों ने ज़बरदस्ती कागज़ों पर मेरे अंगूठे के निशान लिए हैं। काका ने पुलिस से सुरक्षा की माँग की। अब हरिहर काका घर से अलग अपना जीवन बीता रहे हैं। उन्होंने अपनी सेवा के लिए एक नौकर भी रख लिया और पुलिसकर्मी भी उन्हें सुरक्षा दे रहे हैं और उनके ही पैसों पर मौज कर रहे हैं।

CLASSROOM PROGRAMME

एक दिन हरिहर काका के सामने नेताजी ने प्रस्ताव रखा कि वह अपनी जमीन पर 'हरिहर उच्च विद्यालय' खोल दें पर काका ने साफ इनकार कर दिया। अब गाँव के सभी लोग सोचते हैं कि काका की मृत्यु के बाद महंत साधुओं- संत को बुलाकर जमीन पर कब्जा कर लेगा। अब हरिहर काका मौन होकर अपनी जिंदगी काट रहे हैं। काका गूंगेपन का शिकार हो गए हैं। कोई बात कहो, कुछ पूछो, कोई जवाब नहीं। खुली आँखों से बराबर आकाश को निहारा करते हैं। सारे गाँव के लोग उनके बारे में बहुत कुछ कहते-सुनते हैं, लेकिन उनके पास अब कहने के लिए कोई बात नहीं।

हरिहर काका कहानी का उद्देश्य समाज की स्वार्थलोलुपता को हमारे सामने लाना है और स्वार्थी लोगों से सचेत करना है, ताकि ऐसे लोगों से हम खुद को बचा सकें। अब हमारे समाज में रिश्तों के अर्थ बदल गए हैं, पैसों के लालच में लोग एक-दूसरे की जान के दुश्मन बन गए है। समाज में रिश्तों की अहमियत कम हो गई है, अब लोग सिर्फ अपने मतलब तक ही रिश्ता रखते है। हरिहर काका कहानी से लेखक हमें यह शिक्षा देना चाहते हैं कि ऐसे स्वार्थी लोगों से हमें बच कर रहना चाहिए।

शब्दार्थ

चंद	: कुछ
आसक्ति	: लगाव
व्यावहारिक	: व्यावहार सम्बन्धी
वैचारिक	: विचार सम्बन्धी
दुलार	: प्यार
सयाना	: व्यस्क / बुद्धिमान / समझदार
प्रतीक्षा	: इंतज़ार
फ़िलहाल	: अभी / इस समय

INTERVAL
Individual Tuition Concept

मझधार	: बीच में (जल प्रवाह या भवसागर के मध्य में)
विलीन	: लुप्त हो जाना
विकल्प	: दूसरा उपाय
उक्ति	: कथन / वाक्य
ठाकुरबारी	: देवस्थान
प्रचलित	: चलनसार
जाग्रत	: जगाना
कलेवर	: शरीर / देह / ऊपरी ढाँचा
मनौती	: मन्नत
परंपरा	: प्रथा / प्रणाली
अधिकांश	: ज्यादातर
समिति	: संस्था
सञ्चालन	: नियंत्रण / चलाना
नियुक्ति	: तैनाती / लगाया गया
विमुख	: प्रतिकूल
चपेट	: आघात / प्रहार
अहाता	: चारों ओर से दीवारों से घिरा हुआ मैदान
अखंड	: निर्विघ्न
दवनी	: गेंहूँ / धान निकालने की प्रक्रिया

INTERVAL
Individual Tuition Concept

अगउम	: प्रयोग में लाने से पहले देवता के लिए निकाला गया अंश
घनिष्ठ	: अत्यधिक निकटता
प्रवचन	: वेद, पुराण आदि का उपदेश करना
सार्थक	: उद्देश्य वाला
परिस्थितिवश	: परिस्थितियों के कारण
फूटी आँखों न सुहाना	: थोड़ा भी अच्छा न लगना
दोनों जून	: दोनों वक्त
व्यंजन	: अच्छा खाना
संतोष	: तृप्ति / प्रसन्नता / हर्ष
तबीयत	: शरीर की स्थिति / मन की स्थिति
मशगूल	: व्यस्त
धमाचौकड़ी	: उछल-कूद
दालान	: बरामदा
मोहभंग	: प्रेम की भ्रान्ति का नाश
विराजमान	: उपस्थित
हुमाध	: हवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री
कान खड़े होना	: सावधान होना
तत्क्षण	: उसी समय
संयोग	: किस्मत

INTERVAL
Individual Tuition Concept

एकांत	: खाली
स्वार्थ	: अपना मतलब
संकोच	: झिझक
बैकुंठ	: स्वर्ग
कीर्ति	: प्रसिद्धि /ख्याति
पाँव पखारना	: पाँव धोना
अकारथ	: अकारण
प्रतिक्रिया	: प्रतिकार / बदला / क्रिया के विरोध में होनेवाली घटना
परिवर्तित	: बदला हुआ
इंतज़ाम	: प्रबंध
चिंतामग्न	: सोच में पड़ना
शंकालु	: संदेह करने वाला
बेचैन	: व्याकुल
मिष्टान्न	: मिठाई
व्यंजन	: तरह-तरह का भोजन
भावी आशंका	: भविष्य की चिंता
मथना	: बार-बार सोचना
पसीज़	: मन में दया का भाव जागना
याचना	: माँगना

INTERVAL
Individual Tuition Concept

आवभगत	: सत्कार
मुस्तैद	: कमर कस कर तैयार रहना
श्रद्धा	: आदरपूर्ण आस्था या विश्वास
निरंतर	: लगातार
तथ्य	: वास्तविक घटना
वाकिफ	: परिचित
अवगत	: जाना हुआ
कीर्ति	: प्रसिद्धि / ख्याति
अचल	: गतिहीन
समाधान	: उपाय
प्रत्यक्ष	: जो सामने दिखाई दे
परोक्ष	: जो सामने दिखाई न दे
हिमायती	: तरफदारी करने वाला / पक्षपाती
जबरदस्ती	: बलपूर्वक
अतिरिक्त	: सिवाय
विकल्प	: उपाय
राजी	: सहमत
दबंग	: प्रभावशाली
परिणत	: जिसमें परिवर्तन हुआ हो

INTERVAL
Individual Tuition Concept

गोपनीयता	: जो सभी को न बता कर कुछ लोगो को ही बताया जाए
निर्वाह	: निभाना / आज्ञानुसार कार्य करना
भनक	: उड़ती खबर
मय	: युक्त / भरा हुआ
दल-बल	: संगी-साथी
सन्नाटा	: चुपी / मौन
व्याप्त	: पूरी तरह फैला और समाया हुआ
हरजाने	: हानि के बदले दिया जाने वाला धन
प्रस्थान	: जाना
सम्मिलित	: सामूहिक
तितर-बितर	: अस्त-व्यस्त
बूते	: अपने बल पर
जबरन	: जबरदस्ती
आदरणीय	: आदर के योग्य
श्रद्धेय	: श्रद्धा के योग्य
घृणित	: घिनौना
दुराचारी	: दुष्ट / बुरा आचरण करने वाला
नेक	: भला
बेचैन	: व्याकुल

INTERVAL
Individual Tuition Concept

उबारना	: पार करना / निकलना
एकमात्र	: केवल एक
दरोगा	: इंस्पेक्टर
इंचार्ज	: प्रभारी
दस्तक	: दरवाजा खटखटाना
सीमित	: सीमा के अंदर
असमर्थ	: योग्यता न होना
खून खौल उठना	: बहुत क्रोध आना
परदाफ़ाश	:भेद प्रकट कर देना
बयान	: हाल / वृतांत
घृणा	: घिन
बहुमूल्य	: बहुत ज्यादा कीमती
सँजोना	: सँभाल कर रखना
सुरमा	: योद्धा / बहादुर
ड्यूटी	: कर्तव्य / काम
खूँखार	: अत्यधिक क्रूर / निर्दयी
प्रतिक्रिया	: प्रतिकार / बदला
व्यक्त	: स्पष्ट / साफ़
बाने	: वेश में

INTERVAL
Individual Tuition Concept

कुकर्मी	: बुरे काम करने वाले
अर्जित	:इकठ्ठा
घृणित	: बुरा
माध्यम	: सहारा
दूध की मक्खी	: तुच्छ समझना / बेकार समझना
तनिक	: थोड़े भी
हाथापाई	: मारपीट
प्रतिकार	: विरोध
प्रहार	: हमला
चेत	: ध्यान
तत्क्षण	: उसी पल
तत्काल	: उसी समय
तत्परता	: दक्षता / निपूर्णता
फुरती	: तेज़ी

INTERVAL
Individual Tuition Concept

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

- **कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?**

उत्तर:-हरिहर काका और कथावाचक (लेखक) दोनों के बीच में बड़े ही मधुर एवं आत्मीय संबंध थे, क्योंकि दोनों एक गाँव के निवासी थे। कथावाचक गाँव के चंद लोगों का ही सम्मान करता था और उनमें हरिहर काका एक थे। इसके निम्नलिखित कारण थे-

- हरिहर काका कथावाचक के पड़ोसी थे।
- कथावाचक की माँ के अनुसार हरिहर काका ने उसे बचपन में बहुत प्यार किया था।
- कथावाचक के बड़े होने पर उसकी पहली दोस्ती हरिहर काका के साथ ही हुई थी। दोनों आपस में बहुत ही खुल कर बातें करते थे।

- **ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है?**
- उत्तर:-ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं, उनसे उनकी ठाकुर जी के प्रति भक्ति भावना, आस्तिकता, प्रेम तथा विश्वास को पता चलता है। वे अपने प्रत्येक कार्य की सफलता का कारण ठाकुर जी की कृपा को मानते थे।

- **हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?**

उत्तर:-हरिहर काका एक निःसंतान व्यक्ति थे। उनके पास पंद्रह बीघे जमीन थी। हरिहर काका के भाइयों ने पहले तो उनकी खूब देखभाल की परंतु धीरे-धीरे उनकी पत्नियों ने काका के साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया। महंत को जब यह पता चला तो वह बहला-फुसलाकर काका को ठाकुरबारी ले आए और उन्हें वहाँ रखकर उनकी खूब सेवा की। साथ ही उसने काका से उनकी पंद्रह बीघे जमीन ठाकुरबारी के नाम लिखवाने की बात की। काका ने जब ऐसा करने से मना किया तो महंत ने उन्हें मार-पीटकर जबरदस्ती कागज़ों पर अँगूठा लगवा दिया। इस बात पर दोनों पक्षों में जमकर झगड़ा हुआ। दोनों ही पक्ष स्वार्थी थे। वे हरिहर काका को सुख नहीं दुख देने पर उतारू थे। उनका हित नहीं अहित करने के पक्ष में थे। दोनों का लक्ष्य जमीन हथियाना था। इसके लिए दोनों ने ही काका के साथ छल व बल का प्रयोग किया। इसी कारण हरिहर काका को अपने भाई और महंत एक ही श्रेणी के लगने लगे।

INTERVAL Individual Tuition Concept

- **हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?**

उत्तर:-हरिहर काका एक निःसंतान व्यक्ति थे। उनके पास पंद्रह बीघे जमीन थी। हरिहर काका के भाइयों ने पहले तो उनकी खूब देखभाल की परंतु धीरे-धीरे उनकी पत्नियों ने काका के साथ

दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया। महंत को जब यह पता चला तो वह बहला-फुसलाकर काका को ठाकुरबारी ले आए और उन्हें वहाँ रखकर उनकी खूब सेवा की। साथ ही उसने काका से उनकी पंद्रह बीघे जमीन ठाकुरबारी के नाम लिखवाने की बात की। काका ने जब ऐसा करने से मना किया तो महंत ने उन्हें मार-पीटकर जबरदस्ती कागज़ों पर अँगूठा लगवा दिया। इस बात पर दोनों पक्षों में जमकर झगड़ा हुआ। दोनों ही पक्ष स्वार्थी थे। वे हरिहर काका को सुख नहीं दुख देने पर उतारू थे। उनका हित नहीं अहित करने के पक्ष में थे। दोनों का लक्ष्य जमीन हथियाना था। इसके लिए दोनों ने ही काका के साथ छल व बल का प्रयोग किया। इसी कारण हरिहर काका को अपने भाई और महंत एक ही श्रेणी के लगने लगे।

- **हरिहर काका के मामले में गाँववालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?**

उत्तर:-हरिहर काका के मामले में गाँव के लोगों के दो वर्ग बन गए थे। दोनों ही पक्ष के लोगों की अपनी-अपनी राय थी। आधे लोग परिवार वालों के पक्ष में थे। उनका कहना था कि काका की जमीन पर हक तो उनके परिवार वालों का बनता है। काका को अपनी ज़मीन-जायदाद अपने भाइयों के नाम लिख देनी चाहिए, ऐसा न करना अन्याय होगा। दूसरे पक्ष के लोगों का मानना था कि महंत हरिहर की ज़मीन उनको मोक्ष दिलाने के लिए लेना चाहता है। काका को अपनी ज़मीन ठाकुरजी के नाम लिख देनी चाहिए। इससे उनका नाम या यश भी फैलेगा और उन्हें सीधे बैकुंठ की प्राप्ति होगी। इस प्रकार जितने मुँह थे उतनी बातें होने लगीं। प्रत्येक का अपना मत था। इन सबको एक कारण था कि हरिहर काका विधुर थे और उनकी अपनी कोई संतान न थी जो उनका उत्तराधिकारी बनता। पंद्रह बीघे जमीन के कारण इन सबका लालच स्वाभाविक था।

- **समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।**

उत्तर:-आज समाज में मानवीय मूल्य तथा पारिवारिक मूल्य धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। ज्यादातर व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए रिश्ते-नाते निभाते हैं। अब रिश्तों से ज्यादा रिश्तेदार की कामयाबी और स्वार्थ सिद्धि की अहमियत है। रिश्ते ही उसे अपने-पराए में अंतर करने की पहचान करवाते हैं। रिश्तों के द्वारा व्यक्ति की समाज में विशेष भूमिका नि रित होती है। रिश्ते

CLASSROOM PROGRAMME

ही सुख-दुख में काम आते हैं। यह दुख की बात है कि आज के इस बदलते दौर में रिश्तों पर स्वार्थ की भावना हावी होती जा रही है। रिश्तों में प्यार व बंधुत्व समाप्त हो गया है। इस कहानी में भी यदि पुलिस न पहुँचती तो परिवार वाले काका की हत्या कर देते । इनसानियत तथा रिश्तों का खून तब स्पष्ट नज़र आता है जब महंत तथा परिवार वालों को काका के लिए अफ़सोस नहीं बल्कि उनकी हत्या न कर पाने की अफ़सोस है। ठीक इसी प्रकार आज रिश्तों से ज्यादा धन-दौलत को अहमियत दी जा रही है।

- **हरिहर काका की किस स्थिति ने लेखक को चिंतित कर दिया?**

उत्तर:-इस बार जब लेखक हरिहर काका से मिलने गया और उनकी तबीयत के बारे में पूछा तो उन्होंने सिर उठाकर एक बार लेखक की ओर देखा और सिर झुका लिया। इसके बाद उन्होंने दुबारा सिर नहीं उठाया। उनकी यंत्रणा और मनोदशा के बारे में आँखों ने बहुत कुछ कह दिया पर काका कुछ बोल न सके। उनकी इस दशा ने लेखक को चिंतित कर दिया।

- **लेखक ने कैसे जाना कि हरिहर काका उसे बचपन में बहुत प्यार करते थे?**

उत्तर:-लेखक को उसकी माँ बताया करती थी कि हरिहर काका बचपन में उसे बहुत प्यार करते थे। वे उसे कंधे पर बिठाकर घुमाया करते थे। एक पिता अपने बेटे को जितना प्यार करता है, हरिहर काका उससे ज्यादा प्यार लेखक को करते थे। वे जितना खुलकर लेखक से बातें करते थे, उतना किसी अन्य से नहीं। हरिहर काका ने ऐसी दोस्ती किसी अन्य के साथ नहीं की। इस तरह उसने जाना कि काका उसे बचपन में बहुत प्यार करते थे।

- **यंत्रणाओं के बीच जी रहे हरिहर काका की तुलना लेखक ने किससे की है और क्यों ?**

उत्तर:-यंत्रणाओं के बीच जी रहे हरिहर काका की तुलना लेखक ने मँझधार में फँसी उस नावे से की है, जिस पर बैठे सवार चिल्लाकर भी अपनी जान की रक्षा नहीं कर सकते हैं। इसका कारण यह है कि उनकी चिल्लाहट दूर-दूर तक फैले सागर की उठती-गिरती लहरों में खोकर रह जाती है। इस तरह उसकी मदद के लिए कोई नहीं आ पाता और वह जहाज डूबकर रह जाती है।

- **लेखक के गाँव का संक्षिप्त परिचय दीजिए।**

CLASSROOM PROGRAMME

उत्तर:-लेखक को गाँव आरा कस्बे से चालीस किलोमीटर दूर है, जिसकी आबादी ढाई-तीन हजार से अधिक ही होगी। इस गाँव में तीन प्रमुख स्थान हैं। गाँव के पश्चिम किनारे का बड़ा-सा तालाब, गाँव के मध्य स्थित बरगद का पुराना वृक्ष और गाँव के पूरब में स्थित ठाकुर जी का विशाल मंदिर। इसे गाँव के लोग ठाकुरबारी कहते हैं। आगे चलकर यही ठाकुरबारी गाँव की पहचान बन गई।

- **हरिहर काका के परिवार का संक्षिप्त परिचय दीजिए।**

उत्तर:-हरिहर काका का भरा-पूरा परिवार है। उनके चार भाई हैं। सबकी शादी हो चुकी है। हरिहर काका के अलावा सबके बाल बच्चे हैं। बड़े और छोटे भाई के लड़के काफ़ी सयाने हो गए हैं। दो की शादियाँ हो गई हैं। उनमें से एक पढ़-लिखकर शहर के किसी दफ्तर में क्लर्की करने लगा है, लेकिन हरिहर काका की अपनी देह से कोई औलाद नहीं। औलाद के लिए उन्होंने दो शादियाँ कीं, लेकिन बिना बच्चा जने उनकी दोनों पत्नियाँ स्वर्ग सिधार गईं।

- **अपने भाइयों के परिवार के प्रति हरिहर काका के मोहभंग की शुरुआत कैसे हुई ?**

उत्तर:-कभी हरिहर काका की तबीयत खराब हो जाती तो वह मुसीबत में पड़ जाते। इतने बड़े परिवार के रहते हुए भी कोई उन्हें पानी देने वाला तक नहीं था। बच्चे या तो पढ़-लिख रहे होते या धमाचौकड़ी मचाते। भाई खेतों पर गए रहते और औरतें हाल पूछने भी नहीं आतीं। दालान के कमरे में अकेले पड़े हरिहर काका को स्वयं उठकर अपनी ज़रूरतों की पूर्ति करनी पड़ती। ऐसे वक्त अपनी पत्नियों को याद कर-करके हरिहर काका की आँखें भर आतीं। भाइयों के परिवार के प्रति मोहभंग की शुरुआत इन्हीं क्षणों में हुई थी।

- **महंत जी ने हरिहर काका का अपहरण किस तरह करवाया?**

उत्तर:-हरिहर काका से उनकी जमीन का वसीयत करवाने के लिए महंत जी ने उनके अपहरण का रास्ता अपनाया। इसके लिए आधी रात के आसपास ठाकुरबारी के साधु-संत और उनके पक्षधर भाला, आँडासा और बंदूक से लैस एकाएक हरिहर काका के दालान पर आ धमके। हरिहर काका के भाई इस अप्रत्याशित हमले के लिए तैयार नहीं थे। इससे पहले कि वे जवाबी

CLASSROOM PROGRAMME

कार्रवाई करें और गुहार लगाकर अपने लोगों को जुटाएँ, तब तक ठाकुरबारी के लोग उनको पीठ पर लादकर चंपत हो गए।

- **हरिहर काका को छुड़ाने में असफल रहने पर उनके भाई क्या सोचकर पुलिस के पास गए?**

उत्तर:-हरिहर काका के भाई उन्हें ठाकुरबारी से छुड़ा पाने में असफल रहे तो वे यह सोचकर पुलिस के पास गए कि जब वे पुलिस के साथ ठाकुरबारी पहुँचेंगे तो ठाकुरबारी के भीतर से हमले होंगे और साधु-संत रँगे हाथों पकड़ लिए जाएँगे, लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। ठाकुरबारी के अंदर से एक रोड़ा भी बाहर नहीं आया। शायद पुलिस को आते हुए उन्होंने देख लिया था।

- **'महंतों और मठाधीशों का लोभ बढ़ाने में लोगों की गहन धार्मिक आस्था का भी हाथ होता है।' 'हरिहर काका' पाठ के आलोक में अपने विचार लिखिए।**

अथवा

लोगों की गहन धार्मिक आस्था के कारण महंत और मठाधीशों में लालच एवं शोषण की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है। इससे आप कितना सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-लोगों की धार्मिक आस्था ज्यों-ज्यों बढ़ती है, त्यों-त्यों वे अपने हर अच्छे कार्य का श्रेय धर्म और देवालयों में विराजमान अपने आराध्य को देने लगते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि ऐसा उनके परिश्रम के कारण हुआ है। अपनी खुशी की अभिव्यक्ति एवं अपने आराध्य के प्रति वे कृतज्ञता प्रकट करने के लिए धन, रुपये, जेवर आदि अर्पित करते हैं। उनकी इस भावना का अनुचित लाभ वहाँ उपस्थित महंत और मठाधीश उठाते हैं और धर्म का भय तथा स्वर्गलोक का मोह दिखाकर लोगों को उकसाते हैं कि वे अधिकाधिक चढ़ावा चढ़ाएँ जो प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों ही रूपों में उनकी स्वार्थपूर्ति, लोभ, लिप्सा एवं उदरपूर्ति का साधन बनता है। ठाकुरबारी में ज्यों-ज्यों चढ़ावा आता है त्यों-त्यों वहाँ के महंत, पुजारी एवं अन्य साधुओं का लोभ इस तरह बढ़ जाता है कि वे साधुता ही नहीं मानवता को छोड़कर हैवानियत पर उतर आते हैं। वे हरिहर काका की जमीन हड़पने के लिए मानवता को कलंकित करने से भी बाज नहीं आते हैं। इस तरह निस्संदेह मनुष्य की गहन धार्मिक भावना महंतों और मठाधीशों में लोभ, लालच और स्वार्थपरता पैदा करती है।

INTERVAL Individual Tuition Concept

- **महंत जी ने हरिहर काका की ज़मीन हड़पने के लिए धर्म, मोह और माया का सहारा किस तरह लिया? उनका ऐसा करना आप कितना उचित मानते हैं?**

  उत्तर:-खलिहान की ओर जाते हुए गुस्साए हरिहर काका को महंत जी अपने साथ ठाकुरबारी ले आए और उनकी जमीन पाने के लिए धर्म, मोह और माया का सहारा लेते हुए काका से समझाते हुए कहने लगे, "हरिहर ! यहाँ कोई किसी का नहीं है। सब माया का बंधन है। तू तो धार्मिक प्रवृत्ति का आदमी है। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम इस बंधन में कैसे फँस गए? ईश्वर में भक्ति लगाओ। उसके सिवाय कोई तुम्हारा अपना नहीं। पत्नी, बेटे, भाई-बंधु सब स्वार्थ के साथी हैं। जिस दिन उन्हें लगेगा कि तुमसे उनका स्वार्थ सधने वाला नहीं, उस दिन वे तुम्हें पूछेगे तक नहीं। इसीलिए ज्ञानी, संत, महात्मा ईश्वर के सिवाय किसी और में प्रेम नहीं लगाते।'महंत द्वारा हरिहर काका के साथ जैसा व्यवहार किया गया उसे मैं तनिक भी उचित नहीं मानता, क्योंकि इससे महंत काका की जमीन हड़पना चाहते थे। इसके अलावा वे काका के मन में उनके परिवार और भाइयों के प्रति दुर्भावना भी भर रहे थे।

- **लोभी महंत एक ओर हरिहर काका को यश और बैकुंठ का लोभ दिखा रहा था तो दूसरी ओर पूर्व जन्म के उदाहरण द्वारा भय भी दिखा रहा था। स्पष्ट कीजिए।**

  उत्तर:-हरिहर काका को समझाते हुए लोभी महंत कह रहा था कि तुम अपने हिस्से की जमीन ठाकुरबारी के नाम लिखकर स्वर्ग प्राप्त करोगे। तुम्हारी कीर्ति तीनों लोकों में फैल जाएगी और सूरज-चाँद के रहने तक तुम्हारा नाम अमर हो जाएगा। इससे साधु-संत भी तुम्हारे पाँव पखारेंगे। सभी तुम्हारा यशोगान करेंगे और तुम्हारा जीवन सार्थक हो जाएगा। ठाकुर जी के साथ ही तुम्हारी भी आरती गाई जाएगी। महंत उनसे कह रहा था कि पता नहीं पूर्वजन्म में तुमने कौन-सा पाप किया था कि तुम्हारी दोनों पत्नियाँ अकाल मृत्यु को प्राप्त हुईं। तुमने औलाद का मुँह तक नहीं देखा। अपना यह जन्म तुम अकारथ न जाने दो। ईश्वर को एक भर दोगे तो दस भर पाओगे। मैं अपने लिए तो तुमसे माँग नहीं रहा हूँ। तुम्हारा यह लोक और परलोक दोनों बन जाएँ, इसकी राह तुम्हें बता रहा हूँ।

INTERVAL
Individual Tuition Concept

- **महंत की बातें सुनकर हरिहर काका किस दुविधा में फँस गए? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

  उत्तर:-महंत की बातें सुनकर हरिहर काका अपनी जमीन किसे दें-भाइयों को या ठाकुर जी के नाम लिखें; इस दुविधा में फैंस गए। वे सोचने लगे कि पंद्रह बीघे खेत की फ़सल भाइयों के परिवार को देते हैं, तब तो कोई पूछता नहीं, अगर कुछ न दें तब क्या हालत होगी? उनके जीवन में तो यह स्थिति है, मरने के बाद कौन उन्हें याद करेगा? सीधे-सीधे उनके खेत हड़प जाएँगे। ठाकुर जी के नाम लिख देंगे तो पुश्तों तक लोग उन्हें याद करेंगे। अब तक के जीवन में तो ईश्वर के लिए उन्होंने कुछ नहीं किया। अंतिम समय तो यह बड़ा पुण्य कमा लें, लेकिन यह सोचते हुए भी हरिहर काका का मुँह खुल नहीं रहा था। भाई का परिवार तो अपना ही होता है। उनको न देकर ठाकुरबारी में दे देना उनके साथ धोखा और विश्वासघात होगा।

- **ठाकुरबारी के साधु-संतों के व्यवहार से काका को किस वास्तविकता का ज्ञान हुआ? साधु-संतों का ऐसा व्यवहार कितना उचित था?**

  उत्तर:-ठाकुरबारी के महंत और अन्य साधु-संत जब काका का अपहरण कर ठाकुरबारी ले आए और कुछ सादे तथा कुछ लिखे कागजों पर जबरन काका के अँगूठे का निशान लिया तब काका को संतों के उस व्यवहार का पता चला जो मुँह में राम बगल में छुरी वाली कहावत चरितार्थ करता है। उन्होंने आदर का पात्र बने महंत के बारे में सपने में भी नहीं सोचा था कि वे इस रूप में भी आएँगे। जिस महंत को वह आदरणीय एवं श्रद्धेय समझते थे, वह महंत अब उन्हें घृणित, दुराचारी और पापी नज़र आने लगा था। अब वह उस महंत की सूरत भी देखना नहीं चाहते थे। अब अपने भाइयों का परिवार मत की तुलना में उन्हें ज्यादा पवित्र, नेक और अच्छा लगने लगा। साधु-संत, जो मोह माया से दूर एवं परोपकारी प्रवृत्ति के समझे जाते हैं उनके द्वारा ऐसा व्यवहार हर दृष्टि से अनुचित था।

पाठ - 2

सपनों के- से दिन

लेखक परिचय

गुरदयाल सिंह (जन्म: 10 जनवरी, 1933) एक प्रसिद्ध पंजाबी साहित्यकार हैं। इन्हें 1999 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। अमृता प्रीतम के बाद गुरदयाल सिंह दूसरे पंजाबी साहित्यकार हैं जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। गुरदयाल सिंह आम आदमी की बात कहने वाले पंजाबी भाषा के विख्यात कथाकार हैं। कई प्रसिद्ध लेखकों की तरह उपन्यासकार के रूप में गुरदयाल सिंह की उपलब्धि को भी उनके आरंभिक जीवन के अनुभवों के संदर्भ में देखा जा सकता है।

गुरदयाल सिंह का जन्म 10 जनवरी, 1933 को पंजाब के जैतो में हुआ। 12-13 वर्ष की आयु में, जब वह कुछ सोचने-समझने लायक़ हो रहे थे, पारिवारिक परिस्थितियों के कारण उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा, ताकि बढ़ई के धंधे में वह अपने पिता की मदद कर सकें। गुरदयाल का जीवन केवल शारीरिक मेहनत तक सिमट गया, जिसमें कोई बौद्धिक या आध्यात्मिक तत्त्व नहीं था। स्कूल छोड़ देने के बाद भी उन्होंने अपने स्कूल ले प्रधानाध्यापक से संपर्क बनाए रखा, जिन्होंने गुरदयाल की प्रतिभा को पहचाना और अपना अध्ययन निजी तौर पर जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। गुरदयाल ने स्कूल छोड़ने के लगभग 10 वर्ष बाद स्वतंत्र छात्र के रूप में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। उनके हितैषी प्रधानाध्यापक ने एक सरकारी प्राइमरी स्कूल में अध्यापक की नौकरी दिलाने में भी उनकी मदद की।

1966 में उनका पहला उपन्यास "मढ़ी दा दीवा" प्रकाशित हुआ, जिसमें एक दलित और एक विवाहित जाट महिला के मौन प्रेम की नाटकीय प्रस्तुति थी। यह दुखांत प्रेम कहानी इतनी सहजता और सरलता से अभिव्यक्त की गई कि पाठक कथाशिल्प पर उनकी अद्भुत पकड़ और अपने पात्रों व सामाजिक परिवेश की उनकी गहरी समझ से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। इसमें दलित वर्ग की ग़रीबी और उनके भावात्मक असंतोष का वर्णन अत्यंत सहजता से किया गया। इसी कारण पूरे लेखकीय जीवन में उन्हें मित्रहीन के मित्र की तरह जाना जाता

CLASSROOM PROGRAMME

रहा है। कथाकार के रूप में उनका शिल्प इतना समर्थ है कि अपनी महत्त्वपूर्ण कृति "परसा" में उन्होंने अपने नायक के जीवन के अप्रत्याशित उतार - चढ़ावों का विस्तृत और सफलतापूर्णक निरूपण किया है। इस उपन्यास के नायक के तीन बेटे हैं। पहला खेल प्रशिक्षक है, जो इंग्लैंड में जाकर बस जाता है, दूसरा पुलिस अधिकारी है, जिसकी जीवन शैली अपने पिता के जीवन से बिल्कुल अलग है, तीसरा बेटा नक्सली हो जाता है और एक पुलिस मुठभेड़ में मारा जाता है। परसा आधुनिक भारतीय कथा साहित्य के एक अविस्मरणीय चरित्र की तरह अपनी छाप छोड़ता है। अपने आसपास के यथार्थ को प्रमाणिकता और विलक्षण कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करना गुरदयाल सिंह की विशिष्टता है और यहीं उनके सभी उपन्यासों को अद्‌भुत रूप से पठनीय बनाती है।

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यास

- मढ़ी दा दीवा (1964)
- अणहोए (1966)
- रेत दी इक्क मुट्ठी (1967)
- कुवेला (1968)
- अध चानणी रात (1972)

कहानी

- सग्गी फुल्ल (1962)
- चान्न दा बूटा (1964)
- रूखे मिस्से बंदे (1984)
- बेगाना पिंड (1985)
- करीर दी ढींगरी (1991)

INTERVAL
Individual Tuition Concept

नाटक

- फरीदा रातीं वड्डीयां (1982)
- विदायगी दे पिच्छीं (1982)
- निक्की मोटी गल (1982)

गद्य

- लेखक दा अनुभव ते सिरजन परकिरिया।

पुरस्कार और सम्मान

- साहित्य अकादमी पुरस्कार (1975)
- पंजाब साहित्य अकादमी पुरस्कार (1989)
- सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (1986)
- शिरोमणि साहित्यकार पुरस्कार (1992)
- पद्मश्री (1998)
- ज्ञानपीठ पुरस्कार (1999)

INTERVAL
Individual Tuition Concept

सपनों के-से दिन पाठ का सारांश

सपनों के-से दिन' कहानी गुरदयाल सिंह जी द्वारा रचित है। इस कहानी में लेखक ने अपने बचपन के माध्यम से स्कूल के वातावरण को दर्शाया है। जहाँ एक तरफ बच्चे खुशी-खुशी स्कूल जाते हैं। वहीँ कभी मास्टर के डर से स्कूल जाने से भी डरते हैं। इसमें दो शिक्षकों के व्यवहार के बारे में बताया गया है। हेडमास्टर शर्मा जी जो बहुत शांत स्वभाव के हैं और दूसरे प्रीतमचंद कठोर स्वभाव के हैं, जो बच्चों को अनुशासन में रहना सिखाते थे।

इस कहानी में लेखक अपने बचपन के दिनों के बारे में बता रहे हैं कि किस तरह से वे जब अपने दोस्तों के साथ खेलने जाते थे, तो उनकी क्या स्थिति होती थी। नंगे पाँव, फटी-मैली सी कच्छी और टूटे बटनों वाले कई जगह से फटे कुर्ते और बिखरे बाल होते थे। लेखक कहते हैं कि जब खेलते-कूदते, भागते-दौड़ते चोट लगती, तब हम ज़ख्मी हो जाते, तो सभी की माँ- बहनें हम पर तरस खाने की जगह मार-पिटाई करती थीं।लेखक बताते हैं कि मेरे साथ

खेलने वाले अधिकतर साथी हमारे ही जैसे परिवारों के हुआ करते थे। सभी निम्न-मध्यम वर्गीय परिवारों से थे, हमारी आदतें भी कुछ मिलती-जुलती थी। हममें से कुछ बच्चे हरियाणा और राजस्थान से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों में से थे। उनके कुछ शब्द सुनकर हमें हँसी आ जाती थी। लेकिन जब हम खेलते थे, तब एक-दूसरे के व्यवहार से बखूबी समझ जाते थे।

हममें से कोई भी ऐसा नहीं था, जिसे स्कूल कैद न लगता हो। दूसरी तरफ जब हम नई श्रेणी में जाते, तो बड़े होने के एहसास से खुश भी होते थे, परंतु साथ में डर भी लगता था कि मास्टरों से पहले से भी अधिक मार पड़ेगी। अब तक जो बात अच्छी तरह याद है, वह स्कूल की छुट्टियों के पहले और उसके बाद का फर्क।स्कूल की छुट्टियों में जब नानी के घर जाते, तो पहले दो-तीन सप्ताह तो ऐसे ही निकल जाते थे। नानी के घर खूब दूध-दही और मक्खन कहने को मिलता था और नानी के घर के पास जो तालाब था वहाँ दोपहर तक नहाते रहते और जो जी में आता तो नानी से माँग लेते थे। जब छुट्टियाँ खत्म होने वाली होती, तो डर बढ़ने लगता था। मास्टर जी ने जो छुट्टियों का काम दिया था, उसका हिसाब लगाने लगते और स्कूल की पिटाई का डर और बढ़ने लगता था।ऐसे समय में हमारा सबसे बड़ा नेता ओमा हुआ करता, जो मास्टरों की मार को सस्ता-सौदा समझता था। फिर वे सोचते कि किस तरह से काम पूरा किया जाए, दिन-रात एक करके काम पूरा करने की कोशिश करते पर सफल नहीं होते और मास्टरों से पीटाई खा लेते थे।

हमारा स्कूल बहुत छोटा था। इसमें छोटे-छोटे नौ कमरे थे, जो अंग्रेजी के 'एच' की तरह बने हुए थे, दाईं ओर पहला कमरा हेडमास्टर श्री मदनमोहन शर्मा जी का था। जिसके दरवाज़े के आगे हमेशा पर्दा लगा रहता था। स्कूल में प्रार्थना के समय वे बाहर आते थे और सीधे खड़ी कतार में लड़कों को देखकर खुश हो जाते थे। स्कूल के सारे अध्यापक भी उनके पीछे कतार में खड़े हो जाते थे, केवल मास्टर प्रीतमचंद जो पीटी के अध्यापक थे। वे लड़कों को भी देखते की कोई कतार से बाहर तो नहीं है। वे बच्चों को दंड देते थे और इसके विपरीत हमारे हेडमास्टर शर्मा जी थे, वे बिल्कुल शांत स्वभाव के थे। वे आठवीं और पाँचवी श्रेणी को अंग्रेजी खुद पढ़ाया करते थे।लेखक का बिना रोए- चिल्लाये स्कूल कभी

CLASSROOM PROGRAMME

जाना नहीं होता था, परंतु कभी-कभी स्कूल में ऐसा भी पल हुआ करता था जिसके चलते स्कूल अच्छा भी लगता था। जब पीटी सर स्काउटिंग का अभ्यास कराते समय रंग-बिरंगी झंडियाँ हाथ में पकड़ाकर वन टू थ्री करते और झंडियाँ ऊपर-नीचे दाएँ-बाएँ लहराते तो बहुत ही मजा आता था। हमारे द्वारा अच्छा करने पर वे हमें 'शाबाशी' भी दिया करते थे।

हर साल अगली कक्षा में प्रवेश करते समय मुझे पुरानी किताबें मिला करती थी इसीलिए अगली कक्षा में जाने का शौक भी नहीं होता था, लेखक के घर की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी पर वे पढ़ना चाहते थे। उस समय जब और बच्चे पढ़ना नहीं चाहते थे, तो उनके माता-पिता ज्यादा ध्यान नहीं देते थे। वे सोचते थे आगे चलकर वो करेगा ही क्या?, जो हमारा काम है, वही तो उसे संभालना है बस हिसाब-किताब ही आ जाए तो काफी है। लेखक का परिवार भी बड़ा था और वे पढ़ना भी चाहते थे। इसीलिए मास्टर जी उन्हें हर साल एक कक्षा आगे की किताब पकड़ा देते थे।दूसरे विश्वयुद्ध का समय था। लोगों को फ़ौज में शामिल होने के लिए नौटंकी और गाने के माध्यम से बहादुरी का दृश्य दिखाकर उन्हें आकर्षित किया करते थे। कभी-कभी हमें भी महसूस होता कि हम भी फ़ौजी जवानों से कम नहीं, धोबी की धुली वर्दी और पालिश किए बूट और जुराबों को पहनकर जब हम स्काउटिंग की परेड करते, तो लगता हम फ़ौजी ही हैं।

हमने मास्टर प्रीतमचंद को कभी भी मुस्कुराते नहीं देखा, उनसे सभी डरते थे और नफरत भी करते थे। मास्टर प्रीतमचंद बहुत सख्त सजा देते थे। वे चौथी श्रेणी में फ़ारसी पढ़ाते थे। एक दिन उन्होंने सभी बच्चों को शब्द-रूप याद करने को कहा परंतु कोई भी बच्चा पूरी तरह याद नहीं कर पाया। मास्टर जी ने सभी बच्चों को टांगों के पीछे से बाँहें निकालकर कान पकड़ने और पीठ ऊँची करने के लिए कहा, कई बच्चे सहन न कर सके और तीन-चार मिनट के बाद बारी-बारी से गिरने लगे।तभी उसी वक्त हेड मास्टर शर्मा उधर से निकले, उन्होंने पीटी सर को बच्चों से इतना बुरा व्यवहार करते देखा, तो उन्हें सहन नहीं हुआ। उन्होंने पीटी सर को बहुत डांटा और उनकी शिकायत डायरेक्टर को लिखकर भेज दी। जब तक ऊपर से आदेश नहीं आ जाता तब तक पीटी सर को स्कूल में आने की अनुमति नहीं

CLASSROOM PROGRAMME

थी।बाद में पीटी सर अपने घर में आराम से रहते थे। उन्हें पक्षियों से बहुत प्यार था। उन्होंने घर में दो तोते रखे हुए थे। वे उन्हें बादाम भी खिलाते थे और उनसे बातें भी किया करते थे। जब बच्चों ने पीटी सर को ऐसे देखा, तो उन्हें चमत्कार-सा लगा कि जो मास्टर स्कूल में बच्चों को मारते-पिटते थे, वे अपने तोतों के साथ आखिर कैसे अच्छे से बातें कर सकते हैं।

इस कहानी के माध्यम से लेखक हमें यह बताना चाहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के भविष्य का विकास करने के साथ ही उनमें नैतिक मूल्यों का विकास करना भी है। और शिक्षकों को बच्चों के साथ मार-पिटाई के स्थान पर प्यार से पेश आना चाहिए। अगर स्कूल में बच्चे काम समय पर नहीं करते, तो उसका कारण जानने की कोशिश करनी चाहिए। बच्चों को खेलने- कूदने के साथ-साथ पढ़ाई को भी महत्व देना चाहिए।

शब्दार्थ

पिंडलियाँ	: घुटने और टखने के बीच का पिछला मांसल भाग
गुस्सैल	: गुस्से वाला
ट्रेनिंग	: प्रशिक्षण
बाल-मनोविज्ञान	: बच्चों के मन का विज्ञान या ज्ञान
परचूनिये	: राशन की दुकान वाला
आढ़तिये	: जो किसानों की फसलों को खरीदते और बेचते हैं
लंडे	: हिसाब-किताब लिखने की पंजाबी प्राचीन लिपि
बहियाँ	: खाता
मुनीमी	: दुकानदारी
लोकोक्ति	: लोगों के द्वारा कही गयी उक्ति/बात
खेडण	: खेलने के
अलियार	: गली की तरह का लंबा सीधा रास्ता
चपड़ासी	: चपरासी `
श्रेणी	: कक्षा

INTERVAL Individual Tuition Concept

सयाने	: समझदार
ननिहाल	: नानी के घर
पिछड़ा	: जो उन्नति न कर सका हो
गंदले	: गंदा, मटमैला
दुम	: पूँछ
सलाह	: विचार-विमर्श,परामर्श
ढाँढ़स	: धीरज दिलाना, हौसला देना
दोपहरी	: दिन में ही
हाँड़ी	: मटका
ठिगने	: छोटे कद का
बालिश्त	: बित्ता
कतार	: पंक्ति
घुड़की	: धमकी भरी डाँट
ठुट्टों	: लात-घुस्से
खाल उधेड़ना	: कड़ा दंड देना, बहुत अधिक मारना-पीटना
तमगा	: पदक, मैडल
डिसीप्लिन	: अनुशासन
गुडविल	: साख, प्रख्याति
सतिगुर	: सतगुरु
फटकारना	: डाँटना
चाव	: शौक, इच्छा
ज़िक्र	: चर्चा
हरफनमौला	: सर्वगुण सम्पन्न, हर क्षेत्र में आगे रहे वाला
ह्विसल	: सीटी

INTERVAL
Individual Tuition Concept

बूट	: जूते
अकड़	: घमण्ड
विलायत	: प्रदेश
शामियाना	: तम्बू
मसखरे	: विदूषक या हँसी-मजाक करने वाले व्यक्ति
रंगरूट	: सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होने वाला सिपाही
लीतर	: फटे-पुराने खस्ताहाल जूते
दफ़्तर	: कार्यालय, ऑफिस
बर्बरता	: असभ्यता एवं जंगलीपन
चौबारा	: वह कमरा जिसमें चारों और से खिड़कियाँ और दरवाजें हों
रति भर	: थोड़ी सी भी
बिल्ला	: पट्टी या डंडा
अलौकिक	: अद्‌भुत या अपूर्व

INTERVAL
Individual Tuition Concept

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

- **कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती-पाठ के किस अंश से सिद्ध होता है?**

  उत्तर:- 'कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती'—यह पाठ के निम्नलिखित अंश से सिद्ध होता है-

  ''हमारे आधे से अधिक साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों से थे। जब बहुत छोटे थे तो उनकी बोली कम समझ पाते। उनके कुछ शब्द सुनकर हमें हँसी आने लगती, परंतु खेलते तो सभी एक-दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ लेते।''

- **पीटी साहब की 'शाबाश' फौज के तमगों-सी क्यों लगती थी ? स्पष्ट कीजिए।**

  उत्तर:-पीटी साहब बिल्ला मार-मारकर बच्चों की चमड़ी तक उधेड़ देते थे। यहाँ तक कि तीसरी-चौथी कक्षाओं के बच्चों से थोड़ा-सा भी अनुशासन भंग हो जाने पर उन्हें कठोर सज़ा

देते थे। ऐसे कठोर स्वभाव वाले पीटी साहब जब बच्चे कोई गलती न करते, तो वे अपनी चमकीली आँखें हलके से झपकाते हुए उन्हें 'शाबाश' कहते थे। उनकी यह 'शाबाश' बच्चों को फ़ौज के सारे तमगों को जीतने के समान लगती थी, अर्थात् मानों उनकी कोई बहुत बड़ी तरक्की हो गई हो, ऐसा महसूस करते थे।

- **स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण आदमी' फौजी जवान क्यों समझने लगता था?**

उत्तर:- जब पीटी साहब स्काउटों को परेड करवाते थे, तो लेफ़्ट-राइट की आवाज़ या सीटी बजाकर मार्च करवाया करते थे तथा उनके राइट टर्न या लेफ़्ट टर्न या अबाऊट टर्न कहने पर लेखक आवाज़ करते हुए लेखक स्वयं को विद्यार्थी न समझकर एक महत्त्वपूर्ण 'आदमी' फ़ौजी जवान समझने लगता था। अपने छोटे-छोटे बूटों की एड़ियों पर दाएँ-बाएँ या एकदम पीछे मुड़कर बूटों की ठक-ठक की

- **हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?**

उत्तर:-हेडमास्टर साहब बच्चों की पिटाई के बिलकुल विरुद्ध थे। वे बच्चों को न दंडित करते थे और न दंड पाते उन्हें देख सकते थे। हेडमास्टर साहब ने देखा कि पीटी मास्टर फारसी पढ़ाते हुए शब्द रूप न सुना पाने के कारण अत्यंत क्रूरतापूर्वक मुरगा बना रखा है तथा उन्हें पीठ ऊँची करने का आदेश भी दे रखा है। चौथी कक्षा के छात्रों को ऐसा दंड देना हेडमास्टर को अत्यंत यातनापूर्ण लगा। उन्होंने इसे तुरंत रोकने का आदेश देते हुए पीटी मास्टर प्रीतमचंद को मुअत्तल कर दिया।

- **पीटी मास्टर प्रीतमचंद को देखकर बच्चे क्यों डरते थे?**

उत्तर:-पीटी मास्टर प्रीतमचंद को स्कूल के समय में कभी भी हमने मुसकराते या हँसते न देखा था। उनका ठिगना कद, दुबला पतला परंतु गठीला शरीर, माता के दागों से भरा चेहरा और बाज-सी तेज आँखें, खाकी वरदी, चमड़े के चौड़े पंजों वाले बूट-सभी कुछ ही भयभीत करने वाला हुआ करता। उनका ऐसा व्यक्तित्व बच्चों के मन में भय पैदा करता और वे डरते थे।

INTERVAL Individual Tuition Concept

- **लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुटूटियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था?**

  उत्तर:-लेखक के छात्र जीवन में गरमी की छुट्टियाँ डेढ़ या दो महीने की होती थी। इसके आरंभ के दो-तीन हफ़्तों तक खूब खेलकूद और मस्ती करते हुए लेखक अपने साथियों संग समय बिताता फिर नानी के घर चला जाता। जब एक महीने की छुटियाँ बचती तो लेखक अध्यापक द्वारा दिए गए दो सौ सवालों के बारे में गणना करता और सोचता कि एक दिन में । दस सवाल हल करने पर बीस दिन में पूरे हो जाएँगे। एक-एक दिन गिनते खेलकूद में दस दिन और बीत जाते तब पिटाई का डर बढ़ने लगता। तब वह डर भगाने के लिए सोचता कि एक दिन पंद्रह सवाल भी हल किए जा सकते हैं पर सवाल न होते और छुट्टियाँ समाप्त होने को आ जाती, तब वह मास्टरों की पिटाई को सस्ता सौदा समझकर बहादुरी से पिटना स्वीकार कर लेता। इस तरह वह बहादुर बनने की कल्पना किया करता।

- **'सपनों के-से दिन' पाठ में हेडमास्टर शर्मा जी की, बच्चों को मारने-पीटने वाले अध्यापकों के प्रति क्या धारणा थी? जीवन-मूल्यों के संदर्भ में उसके औचित्य पर अपने विचार लिखिए।**

  उत्तर:- 'सपनों के-से दिन' पाठ में वर्णित हेडमास्टर शर्मा जी बच्चों से प्यार करते थे। वे बच्चों को प्रेम, अपनत्व, पुरस्कार आदि के माध्यम से बच्चों को अनुशासित रखते हुए उन्हें पढ़ाने के पक्षधर थे। वे गलती करने वाले छात्र की भी पिटाई करने के पक्षधर न थे। जो अध्यापक बच्चों को मारने-पीटने या शारीरिक दंड देने का तरीका अपनाते थे, उनके प्रति उनकी धारणा अच्छी न थी। ऐसे अध्यापकों के विरुद्ध वे कठोर कदम उठाते थे। ऐसे अध्यापकों को स्कूल में आने से रोकने के लिए वे उनके निलंबन तक की सिफ़ारिश कर देते थे।

  हेडमास्टर शर्मा जी का ऐसा करना पूरी तरह उचित था, क्योंकि बच्चों के मन से शिक्षा का भय निकालने के लिए मारपीट जैसे तरीके को बच्चों से कोसों दूर रखा जाना चाहिए। मारपीट के भय से अनेक बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं तो बहुत से डरे-सहमें कक्षा में बैठे रहते हैं और पढ़ाई के नाम पर किसी तरह दिन बिताते हैं। ऐसे बच्चों के मन में अध्यापकों के सम्मान के नाम पर घृणा भर जाती है।

INTERVAL Individual Tuition Concept

- **'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर बताइए कि बच्चों का खेलकूद में अधिक रुचि लेना अभिभावकों को अप्रिय क्यों लगता था? पढ़ाई के साथ खेलों का छात्र जीवन में क्या महत्त्व है और इससे किन जीवन-मूल्यों की प्रेरणा मिलती है?**

  उत्तर:- 'सपनों के-से दिन' पाठ में जिस समय का वर्णन हुआ है उस समय अधिकांश अभिभावक अनपढ़ थे। वे निरक्षर होने के कारण शिक्षा के महत्त्व को नहीं समझते थे। इतना ही नहीं वे खेलकूद को समय आँवाने से अधिक कुछ नहीं मानते थे। अपनी इसी सोच के कारण, बच्चे खेलकूद में जब चोटिल हो जाते और कई जगह छिला पाँव लिए आते तो उन पर रहम करने की जगह पिटाई करते। वे शारीरिक विकास और जीवन-मूल्यों के उन्नयन में खेलों की भूमिका को नहीं समझते थे, इसलिए बच्चों को खेलकूद में रुचि लेना उन्हें अप्रिय लगता था।

  छात्रों के लिए पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का भी विशेष महत्त्व है। ये खेलकूद एक ओर हमारे शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक हैं, तो दूसरी ओर सहयोग की भावना, पारस्परिकता, सामूहिकता, मेल-जोल रखने की भावना, हार-जीत को समान समझना, त्याग, प्रेम-सद्भाव जैसे जीवन-मूल्यों को उभारते हैं तथा उन्हें मजबूत बनाते हैं। इन्हीं जीवन-मूल्यों को अपना कर व्यक्ति अच्छा इनसान बनता है।

INTERVAL
Individual Tuition Concept

- **पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**

  उत्तर:-पाठ के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि पीटी सर प्रीतमचंद बहुत सरल अध्यापक थे। उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

  - **बाह्य व्यक्तित्व**- पीटी सर अर्थात् प्रीतमचंद ठिगने कद के थे, उनका शरीर दुबला-पतला पर गठीला था। उनका चेहरा चेचक के दागों से भरा था। उनकी आँखें बाज की तरह तेज़ थीं। वे खाकी वर्दी, चमड़े के पंजों वाले बूट पहनते थे। उनके बूटों की ऊँची एड़ियों के नीचे खुरियाँ लगी रहती थीं। बूटों के अगले हिस्से में पंजों के नीचे मोटी सिरों वाले कील ठुके रहते थे।

- **कुशल अध्यापक-** प्रीतमचंद एक कुशल अध्यापक थे। वे चौथी श्रेणी के बच्चों को फ़ारसी पढ़ाया करते थे। वे मौखिक अभिव्यक्ति एवं याद करने पर बल दिया करते थे। वे छात्रों को दिन-रात एक करके पढ़ाई करने की शिक्षा दिया करते थे।

आंतरिक व्यक्तित्व

- **कुशल प्रशिक्षक-** वे कुशल प्रशिक्षक थे। वे छात्रों को स्काउट और गाइड की ट्रेनिंग दिया करते थे वे छात्रों से विभिन्न रंग की झंडियाँ पकड़ाकर हाथ ऊपर-नीचे करके अच्छी ट्रेनिंग दिया करते थे। उनके इस प्रशिक्षण कार्य से छात्र सदा प्रसन्न रहा करते थे। वे उस पर छात्रों द्वारा सही काम करने पर शाबाशी भी देते थे।
- **कठोर अनुशासन प्रिय-** प्रीतमचंद अनुशासन प्रिय होने के कारण कठोर अनुशासन बनाए रखते थे। वे छात्रों को भयभीत रखते थे। यदि कोई लड़का अपना सिर इधर-उधर हिला लेता था तो वे उस पर बाघ की तरह झपट पड़ते थे। प्रार्थना करते समय भी वह अनुशासनहीन छात्रों को दंडित करते थे।
- **कोमल हृदयी-** प्रीतम चंद बाहर से कठोर किंतु अंदर से कोमल थे। उन्होंने अपने घर में तोते पाल रखे थे, वे उससे बात करते थे और उसे भीगे हुए बादाम भी खिलाया करते थे। इसके अलावा वे छात्रों द्वारा सही काम किए जाने पर उन्हें शाबाशी भी देते थे।

NTE RVAL
Individual Tuition Concept

पाठ - 3

टोपी शुक्ला

लेखक परिचय

राही मासूम रज़ा का जन्म 1 सितंबर 1927 को पूर्वी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर के गंगौली गाँव में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। अलीगढ़ यूनिवर्सिटी से उर्दू साहित्य में पीएच.डी. करने के बाद उन्होंने कुछ साल तक वहीँ अध्यापन कार्य किया। फिर वे मुंबई चले गए, जहाँ सैकड़ों फ़िल्मों की पटकथा, संवाद और गीत लिखे। प्रसिद्ध धारावाहिक 'महाभारत' की पटकथा और संवाद लेखन ने उन्हें इस क्षेत्र में सर्वाधिक ख्याति दिलाई।राही मासूम रज़ा एक ऐसे कवि-कथाकार थे, जिनके लिए भारतीयता आदमीयत का पर्याय रही। उनके पूरे लेखन में आम हिंदुस्तानी की पीड़ा, दुख-दर्द, उनकी संघर्ष क्षमता की अभिव्यक्ति है। राही ने जनता को बाँटने वाली शक्तियों, राजनीतिक दलों, व्यक्तियों, संस्थाओं का खुला विरोध किया। उन्होंने संकीर्णताओं और अंधविश्वासों, धर्म और राजनीति के स्वार्थी गठजोड़ आदि को भी बेनकाब किया।

राही मासूम रज़ा की प्रमुख कृतियाँ हैं – आधा गाँव, टोपी शुक्ला, हिम्मत जौनपुरी, कटरा बी आर्जू, असंतोष के दिन, नीम का पेड़ (सभी हिंदी उपन्यास); मुहब्बत के सिवा (उर्दू उपन्यास); मैं एक फेरी वाला (कविता संग्रह); नया साल, मौजे गुल : मौजे सबा, रक्से-मय, अजनबी शहर : अजनबी रास्ते (सभी उर्दू कविता संग्रह), अट्ठारह सौ सत्तावन (हिंदी-उर्दू महाकाव्य) और छोटे आदमी की बड़ी कहानी (जीवनी)। राही मासूम रज़ा जी का निधन मार्च 1992 को हुआ।

INTERVAL Individual Tuition Concept

टोपी शुक्ला पाठ का सारांश

लेखक ने कहानी की शुरुआत में कहा है कि वे इफ़्फ़न की कहानी पूरी नहीं सुनाएगा। सिर्फ उतनी ही सुनाएगा, जितनी टोपी की कहानी के लिए उसे जरुरी लग रही है। इस पाठ का मुख्य पात्र टोपी शुक्ला है अर्थात बलभद्र नारायण। उसका मित्र इफ़्फ़न अर्थात सय्यद जरगाम मुरतुज़ा। इफ़्फ़न के बिना शायद टोपी की कहानी अधूरी है, ये दोनों बहुत अच्छे मित्र है।

इफ़्फ़न की दादी जी पूरबी क्षेत्र की रहने वाली हैं। जब दादी दस साल की थी, तो उनकी शादी हो गई और वे लखनऊ आ गईं। परंतु जब तक वे जिंदा रही पूरबी ही बोलती थी। उर्दू तो उनके लिए ससुराल की भाषा थी। जब उनके बेटे की शादी के दिन आए, तो वे गाने-बजाने के लिए तरस गईं। क्योंकि इस्लाम के नियमों के अनुसार घर में गाना-बजाना भला कैसे हो सकता था। उनकी शादी भी मौलवी से हुई थी, जो बिल्कुल इसके विरुद्ध थे। दादी का दिल उदास हो गया था।इफ़्फ़न के जन्म के छठे दिन दादी ने खूब गाना-बजाना किया। इफ़्फ़न की दादी मौलवी नहीं थी, वे एक जमींदार परिवार की बेटी थी, जहाँ वे दूध-घी खाकर बड़ी हुई थी। लेकिन शादी के बाद लखनऊ आकर वे दही के लिए भी तरस गई थी। छोटी-छोटी चीजों के लिए भी उन्हें बहुत सोचना पड़ता था। जब भी वे अपने मायके जाती तो जितना मन होता जी भर के दूध-दही खा लेती थी। फिर लखनऊ वापिस आते ही उन्हें मौलवीन बन जाना पड़ता था।इफ़्फ़न को अपनी दादी से बहुत ज्यादा प्यार था। उसे प्यार तो अपने अब्बू, अम्मी, बड़ी बाजी, छोटी बहन नुजहत से भी था। लेकिन वह सबसे ज्यादा प्यार अपनी दादी से करता था। इफ़्फ़न की अम्मी तो कभी-कभी उसे डांटती और मारती भी थी। बड़ी बाजी भी उसकी पिटाई कर दिया करती थी और छोटी बहन नुजहत इफ़्फ़न की कापियों पर तस्वीरें बना देती। अब्बू भी कभी-कभी घर को न्यायालय समझकर अपना फैसला सुना देते थे। परिवार में बस एक दादी ही थी, जिन्होंने इफ़्फ़न को कभी डांटा नहीं था। वह रात को भी उसे बहराम डाकुओं, अनार परी, 12 बुर्ज, अमीर हमजा, गुलबकावली, हातिमताई, पंज फुल्ला, रानी की कहानियाँ आदि सुनाया करती थीं।

CLASSROOM PROGRAMME

इफ़्फ़न की दादी जी की बोली टोपी को बहुत पसंद थी, उसे भी इफ़्फ़न की दादी की तरह बोलना अच्छा लगता था। टोपी को इफ़्फ़न की दादी और अपनी माँ की पार्टी की दिखाई देती थी। टोपी की माँ और इफ़्फ़न की दादी की बोली एक जैसी ही थी।टोपी को अपनी दादी बिल्कुल भी पंसद नहीं थी। उसे अपनी दादी से नफरत थी और उसे उनकी भाषा पंसद नहीं थी। टोपी को अपनी दादी की भाषा और इफ़्फ़न के अब्बू की भाषा एक जैसी लगती थी।टोपी जब भी इफ़्फ़न के घर जाता था, तो उसकी दादी के ही पास बैठता। टोपी को इफ़्फ़न की दादी का हर एक शब्द शक्कर और तिल के लड्डू की तरह मिट्ठा लगता और आम के रस को सुखाकर बनाई गई मोटी परत की तरह मज़ेदार लगता। इफ़्फ़न की दादी हमेशा टोपी से सबसे पहले उसकी अम्मा का हाल-चाल और अम्मा क्या कर रही हैं, हर बार यही पूछती थी। तो 'अम्मा' शब्द टोपी को समझ नहीं आता। उसे बाद में जब यह समझ आया कि 'अम्मा' माँ को बोलते हैं, तो वह इस शब्द को बार-बार बोलता रहता था। उसे यह शब्द जैसे किसी गुड की डली की तरह लगता था। टोपी इस शब्द को बार-बार बोलकर इसके मीठे स्वाद का आनंद लेता रहता है।

एक दिन टोपी को बैंगन का भुर्ता कुछ ज्यादा अच्छा लगा। टोपी की माँ रामदुलारी खाना परोस रही थी, तो टोपी ने कहा 'अम्मी' जरा बैंगन का भुर्ता, बस इतना ही कहा था कि 'अम्मी' शब्द सुनकर खाने की मेज़ पर बैठे सभी चौंक गए। टोपी की दादी सुभद्रादेवी ने तो उसी वक्त खाना छोड़ दिया और वहाँ से उठकर चली गई। माँ ने उसकी खूब पिटाई की और एक ही बात बार-बार पूछ रही थी कि क्या इफ़्फ़न के घर जाएगा? और वो हाँ ही कहता था।मुन्नी बाबू और भैरव टोपी के भाई थे। मुन्नी बाबू टोपी का बड़ा भाई था और भैरव छोटा भाई था। दोनों भाई टोपी की पिटाई का तमाशा देखते रहे। जिस वक्त टोपी की पिटाई हो रही थी, उस दौरान मुन्नी बाबू ने एक बात और जोड़ दी। उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू ने माँ को कहा कि उसने टोपी को रहीम कबाब जी की दुकान पर कबाब खाते देखा था। लेकिन असल बात तो यह थी कि टोपी ने मुन्नी बाबू को कबाब खाते हुए देखा था। मुन्नी बाबू ने उसे एक इकन्नी रिश्वत भी दी थी, ताकि टोपी घर पर कुछ न बताए।

दूसरे दिन टोपी जब स्कूल गया और उसने स्कूल में इफ़्फ़न को सारी बातें बताई। उस दिन दोनों ही भूगोल शास्त्र की कक्षा को छोड़कर बाहर निकल गए। और पंचम की दुकान से इफ़्फ़न ने केले खरीदे क्योंकि टोपी फल के अलावा बाहर की किसी ओर चीज़ को हाथ नहीं

INTERVAL
Individual Tuition Concept

लगाता था। एक दिन टोपी इफ़्फ़न से कहता क्या हम अपनी दादी नहीं बदल सकते। उसकी दादी इफ़्फ़न के घर और इफ़्फ़न की दादी उसके घर आ जाए। इफ़्फ़न कहता है कि अब्बू यह बात कभी नहीं मानेगे।जिस समय दोनों यह बात कर रहे थे, उसी समय इफ़्फ़न का नौकर आया और ख़बर दी कि इफ़्फ़न की दादी का देहांत हो गया। जब टोपी इफ़्फ़न के घर गया, तो उसका घर लोगों से भरा हुआ था पर टोपी के लिए दादी का न होना ही उसे अकेला कर रहा था। उसके लिए तो पूरा घर ही खाली था। टोपी का दादी के साथ गहरा संबंध बन गया था। अब इफ़्फ़न और टोपी दोनों दादी के बिना अकेले थे। उनको घर में समझने वाला कोई भी नहीं था। टोपी इफ़्फ़न से कहता है काश! तुम्हारी दादी की जगह मेरी दादी की मृत्यु हो गई होती, तो बहुत अच्छा होता

लेखक कहते हैं टोपी ने दस अक्टूबर सन् पैंतालीस को कसम खाई थी कि वह अब ऐसे किसी भी लड़के से दोस्ती नहीं करेगा, जिसके पिता जी कोई ऐसी नौकरी करते हो, जिसमें ट्रांसफर होता रहता है। दस अक्टूबर सन् पैंतालीस के दिन इफ़्फ़न के पिता जी इफ़्फ़न को लेकर मुरादाबाद चले गए थे। टोपी दादी के मरने के बाद अकेला तो महसूस कर ही रहा था और अब इफ़्फ़न के चले जाने के बाद बहुत अकेला हो गया था।

इफ़्फ़न के पिताजी कलेक्टर थे। उनका ट्रांसफर हो जाने के कारण उनके स्थान पर नए कलेक्टर हरनाम सिंह आए। वे उसी बँगले में रहने लगे जिसमें इफ़्फ़न का परिवार रहता था। दूसरे कलेक्टर ठाकुर हरिनाम सिंह के तीनों लड़कों में से टोपी का कोई दोस्त नहीं बन सका। डब्बू सबसे छोटा था और बीलू सबसे बड़ा था। गुड्डू था तो बराबर परंतु अंग्रेजी ही बोलता था।जब इफ़्फ़न को याद करके टोपी उस बँगले में पहुँचा तो, माली और चपरासी टोपी को पहचानते थे, इसलिए चौकीदार ने उसे अंदर जाने दिया। वहाँ नए कलेक्टर के तीनों बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। उन्होंने टोपी से गलत ढंग से बातचीत ही नहीं की बल्कि उसकी पिटाई भी की। उन्होंने टोपी के पीछे अपना कुत्ता भी छोड़ दिया जिसके कारण टोपी को सात सुइयाँ लगवानी पड़ीं।टोपी के में बस एक बूढ़ी नौकरानी सीता ही थी, जो उसका दुःख दर्द समझती थी। तो अब इफ्फ़न के जाने के बाद सीता के साथ ही समय गुजारता था। जब भी घर में टोपी को कोई डांटता था तो सीता ही उसके आंसू पोंछती थी। टोपी की घर में दादी और अन्य सदस्य के साथ बहस होने पर भी वही उसको समझाती थी। ठण्ड के दिन शुरू हो गए। टोपी के दोनों भाई मुन्नी बाबू और भैरव को नया कोट मिला। टोपी को मुन्नी बाबू का पुराना कोट देने को कहा गया। मुन्नी बाबू के लिए जब कोट बनकर आया था तो उसे वो कोट पसंद

CLASSROOM PROGRAMME

नहीं आया था। टोपी मुन्नी बाबू से छोटा था तो उसे कोट दिया गया लेकिन टोपी को भी वो कोट पंसद नहीं आया इसलिए टोपी ने वो कोट दूसरी नौकरानी केतकी के बेटे को दे दिया था। इसलिए टोपी को कोट नहीं मिला और वह अब ऐसे ही ठंड में रहेगा। इस पर दादी और टोपी के बीच बहस भी बहुत हुई थी और दादी ने पूरा घर अपने सिर पर उठा लिया। जब टोपी को उसकी माँ ने दादी को उलटा जवाब देते देखा, तो टोपी को उसकी माँ पीटने लगी। तभी बूढ़ी नौकरानी सीता टोपी को समझाने लगी कि अब वह दसवीं कक्षा में पहुँच गया है, उसे अपनी दादी से इस तरह बात नहीं करनी चाहिए। परंतु टोपी के लिए दसवीं कक्षा में पहुंचना आसान नहीं था।दसवीं कक्षा में पहुँचने के लिए टोपी को बहुत मेहनत करनी पड़ी थी। जब वह पहली बार फ़ेल हुआ तो मुन्नी बाबू इंटरमीडिएट और भैरव छठी कक्षा में प्रथम आए। तब वह बहुत रोया। टोपी पढ़ाई में तेज़ था, परंतु उसे कोई पढ़ने ही नहीं देता था। जब भी टोपी पढ़ाई करने बैठता, तो उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू को कोई काम याद आ जाता या उसकी माँ को कोई ऐसी चीज़ मँगवानी पड़ जाती थी, जो वह नौकरों से नहीं मंगवा सकती थी। टोपी का छोटा भाई उसकी किताबों के पेज फाड़कर जहाज़ बनाने लग जाता था।दूसरे साल टोपी को टाइफाइड हो गया। जिस कारण वह पढ़ाई नहीं कर पाया और फ़ेल हो गया। तीसरे साल पास तो हो गया, परंतु थर्ड डिवीज़न से पास हुआ।

टोपी के सभी दोस्त दसवीं में थे और वह नौवीं कक्षा में ही रह गया। अपनी कक्षा में पढ़ने वालों के साथ उसकी किसी से भी दोस्ती नहीं थी। वह जब भी कक्षा में बैठता, तो उसे बड़ा अजीब लगता था। टोपी ने किसी न किसी तरह इस साल को झेल लिया परंतु सन् इक्क्यावन में उसे नौवी में बैठना पड़ा। वो किसी से ज्यादा बातचीत नहीं करता था। उसके दसवीं के दोस्त भी आगे बढ़ चुके थे।टोपी की कक्षा के एक लड़के ने उससे पूछ ही लिया कि वह उन लोगों के साथ क्यों खेलता है? उसे तो आठवी कक्षा के बच्चों के साथ दोस्ती करनी चाहिए। क्योंकि वे लोग तो आगे दसवीं में निकल जाएँगे। नौवीं में तो पिछली कक्षा के बच्चे ही आने वाले हैं। यह बात टोपी को बहुत बुरी लगी उसे ऐसा लगा जैसे ये बात उसके दिल के आर-पार हो गई हो। फिर उसने उसी समय कसम खाई कि अब उसे चाहे टाइफाइड ही क्यों न होजाए, वह पास होकर ही दिखाएगा।परंतु साल के बीच में ही चुनाव आ गए। टोपी के पिता डॉक्टर भृगु नारायण नीले तेल वाले चुनाव लड़ने के लिए खड़े हो गए। उसके घर में हमेशा लोगों का आना-जाना लगा रहता। ऐसे में टोपी का पढ़ना-लिखना मुश्किल हो रहा था। परंतु जब टोपी के पिता जी चुनाव हार गए। फिर घर में थोड़ी शांति हुई। टोपी की परीक्षा को

CLASSROOM PROGRAMME

अब ज्यादा समय नहीं रह गया और वह पढ़ाई करने में जुट गया। परंतु जैसा वातावरण टोपी के घर में बना हुआ था, ऐसे माहौल में कोई भी नहीं पढ़ सकता था। इसलिए टोपी का पास हो जाना ही काफी था। जब टोपी एक ही कक्षा में दो साल लगाने के बाद पास हुआ, तो उसकी दादी ने कहा वाह! टोपी को भगवान नज़रबंद से बचाए। तीसरे साल भी थर्ड डिवीज़न से पास तो हो गए।

लेखक राही मासूम रज़ा इस कहानी के माध्यम से हमें यह बताने का प्रयास किया है कि प्रेम धर्म और उम्र के बंधन से ऊपर है। बचपन में बच्चों को जहाँ से भी अपनापन और स्नेह मिलता है, वह वहीँ रहना चाहता है। वह चाहे किसी भी उम्र का व्यक्ति हो या किसी भी धर्म से हो। हमें इंसानियत के बीच धर्म को नहीं लाना चाहिए। हमें किसी भी धर्म या जाति के प्रति घृणा नहीं रखनी चाहिए। समाज में हमें धार्मिक एकता बनाए रखनी चाहिए

शब्दार्थ

घपला : गड़बड़

पैगम्बर : पैगाम देने वाला

डेवलपमेंट : विकास

परम्पराएँ : रीती रिवाज़

अटूट : जिसे तोड़ा न जा सके

मौलवी : इस्लाम धर्म का आचार्य

काफ़िर : गैर मुस्लिम

वसीयत : अपनी मृत्यु से पहले ही अपनी सम्पति या उपभोग की वस्तुओं को लिखित रूप से विभाजित कर देना

INTERVAL Individual Tuition Concept

करबला : इस्लाम का एक पवित्र स्थान

नमाजी : नियमित रूप से नमाज पढ़ने वाला

सदका : एक टोटका

पाबंद : नियम, वचन आदि का पालन करनेवाला

छठी : जन्म के छठे दिन का स्नान/पूजन/उत्सव

जश्न : उत्सव/ख़ुशी का जलसा

नाक-नक्शा : रूप-रंग

बीजू पेड़ : गुठली की सहायता से उगाया गया पेड़

बेशुमार : बहुत सारी

बाज़ी : बड़ी बहन

कचहरी : न्यायालय

पाक : पवित्र

परवरदिगार : परमेश्वर

मुलुक : देश

अलबत्ता : बल्कि

अमावट : पके आम के रस को सूखाकर बनाई गई मोटी परत

INTERVAL
Individual Tuition Concept

तिलवा : तिल के बने व्यंजन

चुभलाना : मुँह में कोई खाद्य पदार्थ रखकर उसे जीभ से बार-बार हिलाकर इधर-उधर करना

गज़ब : मुसीबत

चौका : चार वस्तुओं का समूह

डोलने : हिलने

लफ़्ज़ : शब्द

घिन्न : नफ़रत

असलियत : सच्ची बात

चुगलखोर : शिकायत करने वाला

बदन : शरीर

वास्ते : नाते, लिए

जुग़राफ़िया : भूगोल शास्त्र

सरक गए : निकल गए

अय्यसा : ऐसा

तोहरी : तुम्हारी

सकत्यो : सकता

INTERVAL
Individual Tuition Concept

फ़िकर : चिंता

मसहूर : प्रसिद्ध

क्लम्ज़ी : भद्दा

अकड़ : घमंड

लप्पड़ : थपड़

शुशकार : कुत्ते को किसी के पीछे लगाने के लिए नीलाले जाने वाली आवाज़

भुकीं : चुभी

रुख : चेहरा

दाज : बराबरी

जाड़ा :ठण्ड

INTERVAL
Individual Tuition Concept

बदतमीज़ी : अपमान

दर्जे : कक्षा

सितम : ज़ुल्म

मिसाल : उदाहरण

गीली मिट्टी का लौंदा : गीली मिट्टी का पिंड

महत्वपूर्ण प्रश्न उत्तर

- **इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है?**

उत्तर:- इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला अत्यंत घनिष्ठ दोस्त थे। उनकी दोस्ती उस समय हुई जब वे चौथी कक्षा में पढ़ते थे। अलग अलग जाति धर्म के होने के बाद भी उनमें जैसी मित्रता थी, वह अपने आप में अनुकरणीय थी। उनकी मित्रता आदर्श के चरम को छू रही थी। वे एक-दूसरे को दुख-दर्द समझते हैं और एक-दूसरे के प्रति घनिष्ठ लगाव और अपनापन महसूस करते हैं। इफ़्फ़न के पिता के स्थानांतरण के बाद इफ़्फ़न से बिछुड़कर टोपी शुक्ला उदास रहता है और उसी दिन ठान लेता है कि किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा जिसके पिता नौकरी करते हों। इस तरह इफ़्फ़न टोपी शुक्ला कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

- **पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह क्यों था?**

उत्तर:- इफ़्फ़न की दादी का स्वभाव बहुत अच्छा था। वे इफ़्फ़न को ही नहीं उसके मित्र टोपी को स्नेह देती थी। उन्होंने इफ़्फ़न को कभी डाँटा नहीं। वे इफ़्फ़न को रात में बहराम डाकू, अनार परी, बारह बुर्ज, अमीर हमज़ा, गुलबकावली हातिमताई पंचफुल्लारानी की कहानियाँ सुनाया करती थी। उसे अब्बू अम्मी और बाजी से कभी-कभार डाँट-फटकार मिलती थी, परंतु दादी ने उसे कभी डाँटा-डपटा नहीं। यही कारण है कि इफ़्फ़न को उसकी दादी से ही विशेष स्नेह मिला।

- **इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा क्यों लगा?**

INTERVAL
Individual Tuition Concept

उत्तर:- टोपी और दादी में एक ऐसा सम्बन्ध हो चूका था जिसे शायद अगर इफ़्फ़न के दादा जीवित होते तो वह भी बिलकुल उसी तरह न समझ पाते जैसे टोपी के घरवाले न समझ पाए थे। दोनों अलग-अलग अधूरे थे। एक ने दूसरे को पूरा कर दिया था। दोनों ही प्यार के प्यासे थे और एक ने दूसरे की इस प्यास को बुझा दिया था। दोनों अपने-अपने घरों में अजनबी और भरे घर में अकेले थे क्योंकि दोनों को ही उनके घर में कोई समझने वाला नहीं था। दोनों ने एक दूसरे के अकेलापन को दूर कर दिया था। दादी जितना प्यार इफ़्फ़न से करती थी उतना ही टोपी से भी करती थी। दादी दोनों को ही कहानियाँ सुनाया करती थी। इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा इसलिए भी लगा क्योंकि टोपी इफ़्फ़न के घर में केवल दादी से ही मिलने जाया करता था।

- **टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति के थे, पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए।**

उत्तर:- टोपी और इफ्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते से बँधे थे। वास्तव में टोपी में और इफ्फ़न की दादी प्यार के उस मज़बूत और अटूट रिश्ते से जुड़े थे, जो उम्र, जाति और धर्म का बंधन नहीं मानता है। टोपी और दादी ने एक-दूसरे का दुख समझा। उन्हें एक-दूसरे से अपनापन मिला। उनके रिश्ते में किसी तरह का स्वार्थ नहीं था। टोपी, दादी के पास आकर अपने सारे दुख भूल जाता था और दादी को भी टोपी के रूप में उन्हें समझने वाला कोई मिल जाता था।

- **इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर क्यों जाना चाहती थीं?**

  उत्तर:- इफ़्फ़न की दादी किसी इस्लामी आचार्य की बेटी नहीं थी बल्कि एक जमींदार की बेटी थी। दूध-घी खाती हुई बड़ी हुई थी परन्तु लखनऊ आ कर वह उस दही के लिए तरस गई थी। जब भी वह अपने मायके जाती तो जितना उसका मन होता, जी भर के खा लेती क्योंकि लखनऊ वापिस आते ही उन्हें फिर मौलविन बन जाना पड़ता। यही कारण था कि इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर जाना चाहती थीं।

INTERVAL
Individual Tuition Concept